श्री कलराज मिश्र

माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति, राजस्थान का उद्‌बोधन

महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर द्वारा आयोजित

डॉ. के. एन. नाग स्मृति व्याख्यानमाला 2020

'कोविड–19 काल पश्चात उच्च शिक्षा संस्थाओं की भूमिका'

दिनांक 01 जून, 2020 **समय दोपहर : 12.00 बजे**

स्थान : राजभवन, जयपुर

कोविड–19 काल पश्चात उच्च शिक्षा संस्थाओं की भूमिका विषय पर आयोजित इस ऑन लाइन सेमीनार में उपस्थित प्रदेश के उच्च शिक्षा मंत्री माननीय श्री भंवर सिंह भाटी जी, यूजीसी अध्यक्ष डा. डी. पी. सिंह, महाराणा प्रताप कृषि एवम् प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डा. नरेन्द्र सिंह राठौड़, आचार्यगण, इस वेबिनार के प्रतिभागीगण प्राध्यापकगण, छात्र–छात्राओ, बहिनो और भाइयो ।

शिक्षा जगत के युगपुरुष डा. के. एन. नाग की स्मृति में आयोजित व्याख्यानमाला के प्रथम चरण में एक अति महत्वपूर्ण समकालीन विषय पर ऑनलाइन चर्चा के शुभारम्भ के अवसर पर हम सभी एकत्रित हुए हैं। मैं इस महान शिक्षाविद् को भावपूर्ण श्रद्धान्जली अर्पित करता हूँ।

साथियो – उच्च शिक्षा, युवा वर्ग में विश्वास जागृत करने हेतु उत्तरदायी है। भारत एक युवा राष्ट्र है जहॉ 60 प्रतिशत जनसंख्या की आयु 30 वर्ष से कम है जिनका प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से उच्च शिक्षा से जुड़ाव है। उच्च शिक्षण संस्थाओं से अपेक्षित है कि वे युवाओं में ईश्वर के प्रति निष्ठा, वर्तमान में विश्वास तथा भविष्य के लिए आशा का संचार करें।

कोविड–19 महामारी ने भारतवर्ष में उच्च शिक्षण संस्थाओं पर इस युवा वर्ग के भविष्य को संवारने की चुनौती को और अधिक प्रबल कर दिया है। मैं "एम् पी यू ए टी" को कोविड–19 महामारी के विपदा काल और प्रतिकूल परिस्थितियों के परिवेश में इस चर्चा द्वारा रचनात्मक पहल के लिए बधाई देता हूँ। कोविड–19 काल पश्चात उच्च शिक्षा संस्थाओं की भूमिका पर सार्थक चर्चा तथा रणनीति बनाने के लिए आयोजित यह संगोष्ठी शिक्षा जगत की इस महान विभूति स्व. डा. नाग के प्रति हमारी कृतज्ञता अभिव्यक्ति का विनम्र प्रयास हैं।

आज सम्पूर्ण मानवता कोविड–19 के विरुद्ध अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही हैं। इस आपदा काल में जीवन के अन्य पहलुओं की तरह उच्य शिक्षा संस्थान भी शिक्षण को जारी रखने के लिए प्रयासरत हैं।

दुनिया भर के छात्र, अभिभावक और शिक्षाविद नोवल कोरोना वायरस की असाधारण लहर के प्रभाव को महसूस कर रहे हैं। इस महामारी ने सभी स्कूल और महाविद्यालयों में शिक्षण प्रक्रिया में व्यवधान पैदा किया है।

दूरस्थ शिक्षण के माध्यम से इस समय की अवधि में सभी हितधारकों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने का पूर्ण रूपेण प्रयास कर रहा है। भारत में मार्च का तीसरा सप्ताह वह समय था, जब सभी महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में कोरोना के खतरे से कक्षाओं में आमने–सामने शिक्षण व्यवस्था में व्यवधान पैदा हुआ था।

पारंपरिक वार्षिक प्रणाली वाले अधिकांश उच्च शिक्षण संस्थान वार्षिक परीक्षा के समय से गुजर रहे थे। जबकि सेमेस्टर प्रणाली वाले महाविद्यालय लगभग मध्य सेमेस्टर में पाठ्यक्रम की आवश्यकताओं का लगभग पचास प्रतिशत पूरा कर चुके थे। इस घातक विषाणु के लम्बे संक्रमण की परिस्थिति को भांपते हुए राजस्थान के सभी विश्वविद्यालयों में ऑनलाइन शिक्षण व्यवस्था को तत्काल लागू करने के निर्देश जारी किये गये थे।

प्रदेश के सभी कृषि विश्वविद्यालयों में सेमेस्टर प्रणाली के चलते यह व्यवस्था अत्यन्त आवश्यक थी। मैं समझ सकता हूँ कि यकायक शिक्षा पद्धति को बदल कर ऑनलाइन मोड में परिवर्तित करना कठिन था, छात्रों के हितों को देखते हुए ऑनलाइन कक्षाओं के संचालन में आपकी सक्रियता की मैं सराहना करता हूं।

किसी भी संस्थान की ताकत संकाय में निहित है। आज बदले परिवेश में संकाय को अपनी परम्परागत शिक्षण विधियों को बदलने और प्रौद्योगिकी–केंद्रित शिक्षण को विकसित करने की आवश्यकता है। संकाय को अपने आप को ''सक्षम'' व्यक्तियों के रूप में स्थापित करना चाहिए जो छात्रों की उम्मीदों को पूरा कर सके।

संकट का प्रबन्धन करने और लम्बी अवधि में एक लचीली भारतीय शिक्षा प्रणाली का निर्माण करने के लिए एक बहु–आयामी रणनीति आवश्यक है। साथ ही प्रदेश की उच्च शिक्षण संस्थाओं को तत्काल उपायों की क्रियान्विति कर महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में अध्यापन की निरंतरता सुनिश्चित करना आवश्यक है।

ओपन–सोर्स डिजिटल लर्निंग उपाय और लर्निंग मैनेजमेंट सॉफ्टवेयर को अपनाया जाना चाहिए ताकि शिक्षक ऑनलाइन शिक्षण का संचालन कर सकें। समावेशी शिक्षण समाधान, विशेष रूप से सबसे कमजोर और अधिकारविहीन के लिए, विकसित किए जाने की आवश्यकता है। भारत में मोबाइल इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की तेजी से वृद्धि के साथ, प्रौद्योगिकी देश के दूरस्थ भागों में भी शिक्षा की सर्वव्यापी पहुंच और वैयक्तिकरण को सक्षम कर रही है।

पाठ्यक्रम को कमजोर से कमजोर विद्यार्थी तक पहुँचाने के लिए ऑनलाइन तथा ऑफलाइन दोनो शिक्षण पद्वतियों का प्रयोग करते हुए दूरस्थ क्षेत्र के विद्यार्थियों तक भी शिक्षा पहुँचानी है। राजस्थान राज्य के दूरस्थ क्षेत्रों के विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा किस प्रकार पहुँचाई जाये, इस हेतु भी तकनीक के बेहतर उपयोग पर विचार करना होगा।

यह हमारी शिक्षा प्रणाली को बदल सकता है और सीखने और सिखाने की प्रभावशीलता को बढ़ा सकता है, जिससे छात्रों और शिक्षकों को चुनने के लिए कई विकल्प मिलेंगे।

दुनिया भर में विकसित मांग–आपूर्ति के रुझान के लिए उच्च शिक्षा क्षेत्र को तैयार करने के लिए विशिष्ठ रणनीतियों की आवश्यकता होगी – विशेष रूप से छात्रों और संकाय की वैश्विक गतिशीलता से सम्बन्धित और भारत में उच्च अध्ययन की गुणवत्ता और मांग में सुधार। इसके अलावा, नियोजन के प्रस्तावों, इंटर्नशिप कार्यक्रमों और अनुसंधान परियोजनाओं पर महामारी के प्रभाव को कम करने के लिए तत्काल उपायों की आवश्यकता होगी।

परीक्षाओं का संचालन तथा उत्तरपुस्तिकाओं के मूल्यांकन में भी किस प्रकार से त्वरित गति से कार्य हो सके तथा किस प्रकार की तकनीक का प्रयोग किया जाये, यह भी महत्वपूर्ण है।

उच्च शिक्षा में वर्तमान अन्तरण और शैक्षणिक प्रणाली पर पुनर्विचार करना भी महत्वपूर्ण है, एकीकृत शिक्षण प्रणाली के निर्माण के लिए ई–लर्निंग मोड के साथ कक्षा शिक्षण को समेकित रूप से एकीकृत करना भी आवश्यक है। राज्य स्तर पर तकनीकी शिक्षा सुधारों में प्रमुख चुनौती वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली में प्रौद्योगिकी के सहज एकीकरण की है, जो दुनिया में सबसे अलग और सबसे बड़ी है।

इसके अलावा, प्रदेश ही नहीं अपितु सम्पूर्ण राष्ट्र में उच्य शिक्षण संस्थाओं द्वारा विकसित और ऑनलाइन सीखने के लिए गुणवत्ता आश्वासन तंत्र और गुणवत्ता मानदण्ड स्थापित करना भी महत्वपूर्ण है।

आज अलग–अलग विश्वविद्यालय व संस्थाएं एक ही विषय वस्तु को भिन्न भिन्न प्रारूपों में विभिन्न प्रमाणन, कार्यप्रणाली और मूल्यांकन मापदण्डों के साथ विभिन्न स्तरों पर पाठ्यक्रम में प्रदान करते हैं।

कोविड जनित परिदृश्य में जहॉ हम ई–शिक्षण व्यवस्था लागू करने की चर्चा कर रहे हैं, हमें इस शिक्षण का संचालन करना होगा।

ई–शिक्षण हेतु हमें इन्टरनेट के साथ साथ ऐसे प्लेटफार्म की आवश्यकता होगी जो व्यापक हो तथा एक समय में अधिक से अधिक विद्यार्थिओं की आवश्यकता की पूर्ति कर सके।

ऐसी समय–सारणी बनाए जिसमें आरम्भिक दो या तीन माह में दूरस्थ व ई–शिक्षण के माध्यम से सैद्धान्तिक कालांशों का सम्पादन करें। तदोपरान्त विद्यार्थियो को प्रयोगशालाओं व फील्ड में प्रायोगिक अनुभव हेतु छोटे–छोटे समूहों में आवश्यकतानुसार कैम्पस में बुलाया जा सकता है।

यदि आवश्यक हो तो पाठ्यक्रम में आवश्यक बदलाव कर सैद्धान्तिक व प्रायोगिक घटकों के संतुलन को पुनः परिभाषित किया जा सकता हैं। इस हेतु संकाय स्तर पर सक्रिय मन्थन की आवश्यकता होगी।

सौभाग्य से प्रौद्योगिकी ने हमें शिक्षण हेतु कई नए आयाम और तकनीक प्रदान की हैं जिसकी मौजूदा हालात में गंभीर प्रासंगिकता हैं।

संवर्धित वास्तविकता (एआर) और आभासी वास्तविकता (वीआर) जैसी तकनीकों से शिक्षण को संवादात्मक और आकर्षक बनाया जा सकता हैं। आभासी वास्तविकता के अनुप्रयोग प्रायोगिक शिक्षा में शामिल हो सकते हैं जिसमें मिश्रित वास्तविकता शामिल है।

मेरा सभी संकाय साथियों से अनुरोध हैं कि शिक्षण के अतिरिक्त विद्यार्थिओं से संक्रमण के इस काल में संवाद बनाए रखें। छात्र–कल्याण गतिविधियों का ऑनलाइन संचालन कर उन में आत्मविश्वास और मनोबल का संचार करे। साथ ही उन्हें निकट भविष्य में राष्ट्रीय व राज्य स्तर पर आयोजित होने वाली प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षाओं की भी ऑनलाइन तैयारी करवाए।

कोविड –19 जनित संकट काल उच्च शिक्षा प्रणाली को बदलने का एक अवसर है। संस्थानों तथा विश्वविद्यालयों को स्वयं को बदलने के लिए इस अवसर का उपयोग करना चाहिए। उच्च शिक्षा में ऑनलाइन शिक्षण व्यवस्था को बढ़ावा देने, पाठ्यक्रम पुनःनिर्माण कर सैद्धान्तिक के साथ साथ प्रायोगिक अवयवों के सही संतुलन, सहयोग, कौशल विकास और सक्रिय संकाय भागीदारी जैसी बातों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

आप सभी की बौद्धिक क्षमता एवं योग्यता में मेरा पूर्ण विश्वास है। हमें केन्द्र व राज्य सरकार, यूजीसी तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के दिशानिर्देशन में एकजुट होकर कार्य करना होगा। साथ ही आई.टी. तकनीक के अधिकतम उपयोग से बदले हुए परिदृश्य में काम करने की दृढ़ इच्छाशक्ति दिखानी होगी, जिससे हम सुदूर क्षेत्रों में बैठे विद्यार्थियों तक पहुॅच सकें।

मेरी आप सभी से अपेक्षा है कि मौजूदा परिस्थितियों में सर्वश्रेष्ठ हासिल करने के लिए सभी बाधाओं का प्रभावी रूप से सामना करने के लिए कड़ी मेहनत करें। सभी साथ मिल कर इस आपदा का डट कर सामना करें। राज्य एवं राष्ट्र को इस विपदा से निकालने के लिए हर संभव प्रयास करें।

मैं पुनः शिक्षाविद स्वर्गीय डॉ. के. एन. नाग को श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए कोविड–19 के उपरान्त राजस्थान में कृषि व तकनीक उच्च शिक्षा में आशातीत सफलता के लिए शुभकामनाएं देता हूॅ।

धन्यवाद।

जयहिन्द।